" सामाजिक- आर्थिक आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक सजगता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन "

(झारखण्ड राज्य के राँची जिला के सन्दर्भ में)

शोध "संक्षेपिका"

शिक्षाशास्त्र में पीएच०-डी० उपाधि

हेतु प्रस्तुत

वाई० बी० एन० यूनिवर्सिटी , राजाउलातु , नामकोम

राँची -834010

शोध निर्देशक

प्रोफेसर डॉ० एस० पी० यादव

एम० एस० सी० , एम० एड० , पीएच०-डी०

शिक्षाशास्त्र विभाग

वाई० बी० एन० यूनिवर्सिटी

शोधार्थी

सुमन कुमारी

पंजीकरण सं० -1907000681

शिक्षाशास्त्र विभाग

वाई० बी० एन० यूनिवर्सिटी

"सामाजिक–आर्थिक आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक सजगता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन"

(झारखण्ड के राँची जिला के संदर्भ में)

प्रस्तावना :–

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो समाज द्वारा समाज के लिए चलायी जाती है। समाज अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा का सहारा लेता है। प्रत्येक समाज अपनी मान्यताओं एवं आवश्यकताओं के अनुकूल ही शिक्षा की व्यवस्था करता है। जिस समाज की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है वह अनेक संस्थाओं का निर्माण करने एवं शिक्षा के अनेक साधन तथा उपसाधनों को जुटाने में समर्थ हो जाता है और अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा तथा जन शिक्षा की व्यवस्था करता है तथा दूसरी तरफ जिस समाज की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होती है वह अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था शीघ्र नहीं कर सकता। व्यक्ति स्वाभाव से सामाजिक होता है, उसका सम्पूर्ण जीवन समाज का ही दिया हुआ है उसने लिखना–पढ़ना, बोलना–सुनना तथा अन्य व्यक्तियों के साथ व्यवहार करना सभी कुछ समाज में ही रहते हुए सीखता है।

बालक के विकास में सामाजिक–आर्थिक आधार की अहम भूमिका होती है। एक परिपूर्ण बालक के निर्माण में उसकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति से संबंधित कारक प्रभावकारी बिन्दुओं के रूप में उपस्थित होते हैं । अलग–अलग सामाजिक तथा आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, स्वभाव समायोजन करने की क्षमता, सीखने की योग्यता, मानसिकता आदि में स्पष्टतः भिन्नता उपस्थित रहती है बालक समाज में जन्म लेता है वही उसका पालन–पोषण होता है। समाज से ही बालक में सामाजिक, सांस्कृतिक,

नैतिक, चारित्रिक एवं संवेगात्मक गुण विकसित होते है। बालक के विकास में सामाजिक वातावरण की अह्म भूमिका होती है, बालक को जिस प्रकार का सामाजिक वातावरण मिलेगा, बालक में उसी प्रकार के सामाजिक गुणों का विकास होगा। सामाजिक वातावरण बालक की शैक्षिक निष्पत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित कर सकता है। भारत जैसे देश में अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए आर्थिक सम्पन्नता का होना आवश्यक है। निम्न वर्ग के विद्यार्थी इसलिए पिछड़ जाते हैं क्योंकि उनकी पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती है।

उच्च माध्यमिक स्तर में प्रवेश लेनेवाले विद्यार्थी किशोरावस्था में पदार्पण करते है, जिससे उनमें सामाजिक सजगता की अधिकता होती है तथा वे अपने वातावरण के साथ समायोजित करने में कठिनाई अनुभव करता है। इस अवस्था में बालक अपने वातावरण, परिवेश, सामाजिक – आर्थिक स्तर तथा परिवार के साथ समायोजन में कठिनाई अनुभव करता है यदि बालक संवेगात्मक रूप से स्वस्थ होगा तो वह विभिन्न समस्याओं पर विजय प्राप्त कर सकेगा एवं अपने को वातावरण से समायोजित कर पाएगा। किन्तु यदि व्यक्ति असामान्य व्यवहारों को प्रदर्शित करता तो उनके पीछे सामाजिक, आर्थिक, नैतिक कारक हो सकते हैं। विभिन्न मनःस्थितियाँ जैसे मानसिक तनाव और अस्वस्थता, व्यक्तित्व का असंतुलन, दूषित वातावरण का प्रभाव, चिन्ता संवेगात्मक परिपक्वता मानसिक अस्वस्थता आदि व्यक्ति के आचरण, व्यवहार, मानसिकता, शैक्षिक उपलब्धि तथा सामंजस्य की क्षमता की विसंगतियाँ उनके व्यवहार तथा शिक्षा में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होती है। हमारे समाज में आज भी ऐसे लोग है जिसके पास धन अधिक है परन्तु उनके जीवन में गुणवत्ता का अभाव है और वे तार्किक और वैज्ञानिक जीवन के बारे में जानकारी नहीं रखते हैं। आज की युवा पीढ़ी इस डर में

जीते हैं कि शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्हें अच्छी नौकरी प्राप्त करनी है उनके अंदर सामाजिक मूल्यों से अधिक स्वार्थ भाव आ जाता है। अगर छात्र किसी कारण से अपने जीवन में असफल हो जाते हैं तो वे शिक्षा को निरर्थक मान लेते हैं। उनका आत्मविश्वास टूट जाता है। एक विद्यार्थी की मानसिक सजगता और सामाजिक गुण उसके सफल जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। छात्र को मानसिक सजग होना आवश्यक है क्योंकि विद्यार्थी के सामने ऐसी कई विकट परिस्थितियाँ आती है जिसकी वजह से वह अपने आप को अकेला महसूस करता है। किशोरावस्था ऐसी ही अवस्था है जिसमें विद्यार्थी को परिवार, समाज, मित्र एवं मार्गदर्शक की परम आवश्यकता होती है। इसके अभाव में विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि/निष्पत्ति प्रभावित हो सकती है। प्राचीन शिक्षा पद्धति मे गुरू अपने शिष्य को अपना पुत्र समझकर शिक्षा प्रदान करते थे लेकिन वर्त्तमान शिक्षा पद्वति में शिक्षा एक व्यवसाय बन गया है जो व्यक्ति आर्थिक रूप से सम्पन्न है उनके बच्चे अच्छे स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करते हैं वही दूसरी तरफ आर्थिक रूप से पिछड़े परिवार के बालकों की शिक्षा आधी–अधूरी रह जाती है । मार्गदर्शन एवं आत्मप्रेरणा के आभाव में छात्र–छात्राएँ छात्रवृत्ति का सही उपयोग नहीं कर पाते हैं। अधिकांश छात्र सरकार द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सहायता को शिक्षा से हटकर अन्य कार्यो में खर्च कर देते हैं। इसकी एक महत्त्वपूर्ण वजह सामाजिक वातावरण एवं पारिवारिक वातावरण भी है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या अधिक पायी जाती है। माता–पिता (परिवार) द्वारा बच्चों को सही मार्गदर्शन न मिल पाना, शिक्षकों का छात्रों के साथ बढ़ती दूरियाँ इसका प्रमुख कारण है। बालक के सामाजिक विकास पर शिक्षक का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि शिक्षक शिष्ट, शान्त और सहयोगी है तो उसके छात्र भी उसी के समान व्यवहार करते हैं। इसके विपरीत यदि शिक्षक अशिष्ट,

क्रोधी और असहयोगी है तो उसके विद्यार्थी भी उसी के समान बन जाते है। योग्य शिक्षको का सम्पर्क बालक के विकास पर निश्चित प्रभाव डालता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन :

किसी भी शोध समस्या की योजना के निर्माण एवं उसकी क्रियान्वित के पूर्व आवश्यक है कि संबंधित साहित्य का अध्ययन किया जाय; क्योंकि इससे शोधार्थी को इस बात की जानकारी हो जाती है कि पूर्व में किस प्रकार के शोधकार्य, विधियाँ, प्रविधियाँ एवं उपकरणों का प्रयोग किया गया है। उनके परिणाम क्या प्राप्त हुए जिससे शोधार्थी को दिशा निर्देश प्राप्त हो सके। शोधार्थी के अनुसार संबंधित साहित्य का अध्ययन से इस शोध में निम्न बिन्दुओं को निर्धारित करने में सहायता मिलती है –

1) संबंधित साहित्य शोध क्षेत्र के सीमांकन हेतु आवश्यक है।
2) संबंधित साहित्य का अध्ययन समस्या को समझने एवं उसके बारे में योजना बनाने हेतु आवश्यक है।
3) यह शोधकार्यों की पुनरावृत्ति से बचाता है।
4) संबंधित साहित्य का अध्ययन व्यर्थ एवं अनुपयोगी समस्याओं के चयन से बचने हेतु भी आवश्यक है।
5) समस्या का परिभाषीकरण एवं परिकल्पनाओं के निर्माण हेतु आवश्यक है।
6) संबंधित साहित्य का अध्ययन उपलब्ध स्त्रोतों के उपयोग एवं समंको के विश्लेषण हेतु उपयुक्त विधि का चयन हेतु अपेक्षित है।
7) यह निष्कर्षों के विश्लेषण के आधार पर शोधकर्त्ता में आत्मविश्वास पैदा करने के लिए जरूरी है।

मुखर्जी तथा बनर्जी (1971) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि निम्न बौद्धिक स्तर के संदर्भ में परिवार का आकार तथा बच्चों की संख्या, शैक्षिक उपलब्धि से व्युत्क्रम रूप से संबंधित है जबकि कुछ सम्बन्धों में अभिभावकों का सहयोग उच्च उपलब्धि के संदर्भ में सार्थक रूप से सकारात्मक रूप से सहायक है।

रेड्डी (1973) ने अपने अध्ययन में पाया कि विभिन्न चर जैसे – शिक्षा के प्रति अभिभावकों के विचार, घर का सांवेगिक वातावरण, अभिभावकों का प्रोत्साहन तथा घर में प्राप्त शैक्षिक सुविधाएँ एक विषय या अन्य विषय की उपलब्धि के साथ सार्थक रूप से संबंधित है।

प्रहलाद एन॰ एन॰ (1982) ने "जूनियन कॉलेज के विद्यार्थियो का सामाजिक–आर्थिक स्तर, मानसिक योग्यता एवं व्यक्तित्व समायोजन का अनेक नैतिक समायोजन संबंध" विषय पर अध्ययन किया। इन्होनें अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया की भारत वर्ष के कनिष्ठ महाविद्यालयी छात्रों के नैतिक निर्णय में सार्थक अंतर है।

जैन, गणेश लाल (1990) ने ''राजस्थान के शहरी तथा ग्रामीण किशोर बालिकाओं के व्यक्तित्व लक्षणों तथा आकांक्षाओं के स्तर तथा मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'' प्रस्तुत शोध में निष्कर्ष रूप से ग्रामीण किशोर बालिकाओं के आनंद मूल्यों तथा धार्मिक मूल्य पर अधिक अंक प्राप्त करना पाया गया जबकि शहरी किशोर बालिकाओं के आनन्द मूल्यों तथा धार्मिक मूल्य पर अधिक अंक प्राप्त करना पाया गया जबकि शहरी किशोर बालिकाओं के स्वास्थ्य मूल्य, सामाजिक ज्ञान, लोकतांत्रिक मूल्यों पर अधिक अंक प्राप्त करना पाया गया। शहरी किशोर बालिकाएँ जिनके धार्मिक मूल्य उच्च है, वे कम

बुद्धिमान पाई गई जबकि शहरी व ग्रामीण बालिकाएँ जिनके सामाजिक मूल्य उच्च थे, वे अधिक बुद्धिमान पाई गई।

चाँद. एस. के (1992) ने ''किशोर बालक और बालिकाओं के व्यक्तित्व, मूल्यों का सामाजिक, आर्थिक स्तर और शैक्षिक निष्पत्ति से संबंध का अध्ययन। अध्ययन में इन्होंने निष्कर्ष प्राप्त किया कि धार्मिक, जनतांत्रिक, आर्थिक, बौद्धिक, सुखात्मक और पारिवारिक प्रतिष्ठा संबंधी मूल्यों से सामाजिक – आर्थिक स्तर से कोई सार्थक सह–संबंध नहीं पाया गया, परंतु सामाजिक सौंदर्यात्मक और स्वास्थ्य संबंध मूल्यों में सकारात्मक सह–संबंध पाया गया।

सक्सेना, अंजू (1994) ने ''विद्यालय जाने वाले बच्चों के व्यक्तित्व के सबल पक्षों का अध्ययन '' किया। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष निम्न रूप में पाये गये– उच्च वर्ग के बच्चों में उच्च भावनाओं की मात्रा निम्न वर्ग के बच्चों से अधिक पायी गई। उच्च वर्ग के बच्चों में भावनात्मक व संवेगात्मक परिपक्वता निम्न वर्ग के बच्चों से अधिक थी। लड़कों में लड़कियों की तुलना में 15 प्रतिशत व्यक्तित्व घटक सबल व सकारात्मक पाये गये।

स्नेह, आनन्द (1995) ने ''शारीरिक रूप से विकलांग विद्यार्थियों की समस्या, आकांक्षा,व्यक्तित्व समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।'' विद्यार्थियों के दो समूह बनाये गये।एक समूह के विद्यार्थी को स्वतंत्र रखा गया और दोनों समूहों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर, व्यक्तित्व समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

प्रसाद. जे. (2001) ने ''अलवर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक अभिवृत्ति व व्यक्तित्व मूल्यों पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव'' विषय पर शोधकार्य किया तथा निष्कर्ष निकाला कि पारिवारिक वातावरण का सामाजिक अभिवृत्ति व व्यक्तित्व मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है।

सैंगर कल्पना (2002) ने ''विद्यालय जाने वाली किशोर छात्राओं में बुद्धिमत्ता एवं सृजनात्मकता के संदर्भ में समायोजन व भावनात्मक सुरक्षा का अध्ययन'' निष्कर्ष में पाया कि भावनात्मक सुरक्षा,असुरक्षा, स्पष्टता, स्वतंत्रता, उपलब्धि, संगठन, समायोजन और सृजनात्मकता से सकारात्मक रूप से संबंधित थी।

वर्ग मधुरिमा(2003) ने "लाभान्वित व अलाभान्वित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदतों एवं व्यक्तित्व का अध्ययन" निष्कर्ष रूप में पाया कि बालकों की अध्ययन आदतों के आधार पर लाभान्वित व अलाभान्वित दोनों समूह के बालकों में अर्थपूर्ण भिन्नता पायी गयी।

वर्मा, रचनामोहन (2004) ने ''ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विशेषक और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य 960 विद्यार्थियों पर किया। अध्ययन के निष्कर्ष में प्राप्त किया कि व्यक्तित्व के प्रभावी विशेषकों में सार्थक अंतर पाया गया। ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में शहरी छात्र अधिक प्रबल व्यक्तित्व में पाए गए।

सूद, रमन (2005) ने 'व्यक्तित्व कारकों के आधार पर मेडिकल छात्रों का चयन'' विषय पर अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि कुछ मिश्रित कारक शैक्षिक

उपलब्धि की भावी घोषणा करने में सक्षम है। उच्च व निम्न अकादमिक स्तर के विद्यार्थियों में केवल एक कारक ही सार्थक रूप से भिन्न पाया गया हैं।

साफिह जबरन–अल–धामरी (2007) ने ''यमन गणराज्य में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में मानसिक योग्यता के साथ आयु, लिंग एवं विद्यालय उपलब्धि के सबंधों का अध्ययन'' निष्कर्ष में पाया कि विभिन्न आयु समूह के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया। महिला–पुरूष एवं उच्च व निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर पाया गया। मानसिक योग्यता एवं विद्यालय उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध पाया गया।

वर्मा, रचना (2009) ने ''माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की गणित विषय में उपलब्धि,बुद्धि एवं रूचि के मध्य सह–संबंध का अध्ययन'' निष्कर्ष में पाया कि गणितीय उपलब्धि तथा बुद्धि एवं गणितीय उपलब्धि तथा रूचि के मध्य धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया। अन्य चरों के लिए क्रान्तिक अनुपात मान निकाला गया। लिंग, आयु तथा मात्रा का शैक्षिक स्तर छात्रों की गणितीय उपलब्धि को प्रभावित करता है जबकि पिता का शैक्षिक स्तर तथा ट्यूशन का गणितीय उपलब्धि को प्रभावित करता है जबकि पिता का शैक्षिक स्तर तथा ट्यूशन का गणितीय उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पाया गया।

भारती, ए. के. (2010) ने ''ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के किशोरों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन'' विषय में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के लड़के और लड़कियों दोनो को सम्मिलित किया गया है। इस पर अध्ययन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकला कि ग्रामीण क्षेत्र के लड़के व लड़कियों में व्यक्तित्व समायोजन कम है। शहरी क्षेत्र के लड़के व लड़कियों की अपेक्षा संगठनात्मक वातावरण, सकारात्मक संबंध और शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालता है।

मारिया एस (2011) अवधारणा का एक कारक के रूप में आक्रामक व्यवहार स्पेनिश अनिवार्य माध्यमिक शिक्षा छात्रों का एक नमूना के साथ एक अध्ययन माध्यमिक शिक्षा ने 2,022 स्पेनिश छात्रों के एक नमूने में आक्रामक व्यवहार और आत्म अवधारणा के बीच संबंध का विश्लेषण किया। आक्रामक व्यवहार सामाजिक कौशल के किशोर सूची (टीआईएसएएस) का उपयोग कर मूल्यांकन किया गया था, उन का प्रतिगमन विश्लेषण आक्रामक व्यवहार के साथ किशोर नकारात्मक रूप में अपने माता–पिता के साथ अपने रिश्ते को अनुभव करने की संभावना का पता चला है, मौखिक गतिविधियों में कम रुचि दिखाना और उनके गैर–आक्रामक समकक्षों की तुलना में अधिक भावनात्मक अस्थिरता दिखाने का एक उच्च संभावना दिखाया।

रियाज अहमद वानी (2012) उनके शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में आत्म अवधारणा के प्रभाव का एक अध्ययन इस अध्ययन का उद्देश्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर स्वयं अवधारणा के प्रभाव मिल गया था। इस उद्देश्य के लिए 100 ग्यारहवीं कक्षा के छात्रों के दोनों बराबर में पुरुष और महिला छात्रों अनुपात थे सोद्देश्य यादृच्छिक नमूना के माध्यम से दिल्ली वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों से चयनित किया, परिणाम स्वयं अवधारणा के स्तर को आनुपातिक रूप से शैक्षणिक लक्ष्य को हासिल कर प्रभावित कर रहे थे।

एडीयेमी डॉ. बी. (2013) नाइजीरिया में जूनियर माध्यमिक विद्यालयों में अंग्रेजी और सामाजिक अध्ययन में माध्यमिक स्कूल के छात्रों के प्रदर्शन का एक तुलनात्मक अध्ययन में अंग्रेजी भाषा और सामाजिक अध्ययन में छात्रों के प्रदर्शन के बीच सम्बन्ध का पता लगाने के लिए किया । यह सुनिश्चित करने की दृष्टि से अध्ययन

है जो जूनियर तथा सीनियर स्कूल के छात्रों को सामिल किया गया। जो राज्य के पॉच सरकारी स्कूल के छात्रों का चयन किया। विषय परीक्षण के लिए परीक्षण प्रपत्र का प्रयोग किया,जिसमें से परिणाम में सामान्य अन्तर पाया गया।

खान, एम एम (2014) उच्चतर माध्यमिक छात्रों को व्यक्तिगत समस्याओं पर शोध अध्ययन छात्रों की व्यक्तिगत समस्या उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि के स्तर का पता लगाने के लिए किया गया। उच्च माध्यमिक विद्यालय से सरकारी एवं निजी, अर्द्ध सरकारी विद्यालयों के छात्रों का चयन कर टी परीक्षण विश्लेषण किया गया। छात्रों की व्यक्तिगत समस्या अध्ययन की भगीदारी और शैक्षणिक उपलब्धि पर असर पड़ा और ये एक दूसरे से जुड़े हुए है।

निकहत यास्मीन शफीक, आलिया (2015) "सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों पर परिवार के वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन" इस अध्ययन के शैक्षणिक उपलब्धि पर परिवार के वातावरण के प्रभाव की जांच की। सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों से अध्यापन नमूने के रूप में चुने गए हैं। नौवीं कक्षा की परीक्षा के परिणाम शैक्षणिक उपलब्धि के उपाय के रूप में इस्तेमाल किया गया है, और छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर परिवार के वातावरण के (अनुकूल और प्रतिकूल) के प्रकार के प्रभाव को मापने के लिए अन्वेषक टी परीक्षण आवेदन किया। परिणाम छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए उन्हें प्रदान परिवार के वातावरण और माता पिता का समर्थन से सम्बधित नहीं है।

सिंह, ए. आर (2017) ने दिल्ली व हरियाणा के विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा बुद्धि, गणित में उपलब्धि

बर्हिमुखता व अन्तर्मुखता आदि चारों के बीच संबन्धों का अध्ययन इन्होने निष्कर्ष में पाया कि दिल्ली व हरियाणा के विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांक एवं अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। दिल्ली व हरियाणा के समान सामाजिक सांस्कृतिक स्तर से संबधित विद्यालयों में आवश्यक अंतर पाया गया व बालक की शैक्षिक उपलब्धियों को अभिप्रेरणा से प्रभावित पाया गया।

एस. मल्होत्रा (2019) ने हाई स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि, सामाजिक– आर्थिक स्तर व्यक्तित्व समायोजन दुःचिन्ता व शैक्षिक उपलब्धियों के मध्य संबध। इस अध्ययन के निष्कर्ष में छात्र एवं छात्राओं दुचिन्ता के स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह–संबध पाया गया। सामान्यतः छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में दुचिन्ता का स्तर अधिक प्राप्त हुआ।

अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य :

भारत एक विकासशील देश है। भारत का एक राज्य झारखण्ड की राजधानी राँची (जिला) में जनजातीय लोगों की जनसंख्या अधिक पायी जाती है। 2011 की जनगनणा के अनुसार राँची जिले की साक्षरता दर 66.4% है। राँची जिला में सामाजिक–आर्थिक स्तर पर लोग पिछड़े हुए है। माता–पिता अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा दिलाने में असमर्थ होते हैं, जिस कारण छात्रों में मानसिक सजगता और शैक्षिक उपलब्धि में प्रभाव देखने को मिलता है। शोधार्थी द्वारा राँची में स्थित ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का उनके शैक्षिक उपलब्धि में आनेवाली समस्या का गहनतापूर्ण अध्ययन करके छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में वृद्धि करने का प्रयास है । वर्त्तमान समय आधुनिकीकरण, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास के साथ– साथ वैश्वीकरण का युग

है। वे छात्र जो निम्न सामाजिक– आर्थिक परिवेश में आते हैं वे इस तकनीकी साधनों की शिक्षा से पिछड़ जाते हैं। वे छात्र जिनमें मानसिक सजगता की विशेषता अधिक पायी जाती है वे आज के दौर में अपने को सक्षम सिद्ध कर पाते हैं और वे छात्र जो इन विशेषताओं से पीछे रह जाते हैं वे निश्चित रूप से अपने आप को असंतुलित एवं पिछड़ा हुआ पाते हैं। ये विशेषताएँ प्राथमिक स्तर पर कौशल के साथ विकसित होना प्रारंभ हो जाती है और शिक्षा के उच्च स्तर तक परिपक्वता में परिणत हो जाती है। समाज और परिवार का वातावरण सकारात्मक होना आवश्यक है, क्योंकि छात्र सर्वप्रथम अपने परिवार के सदस्य से सीखता है। छात्र जिस स्तर की शिक्षा प्राप्त करता है वह उसके मानसिक सजगता और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

अध्ययन का उद्देश्य :

किसी भी कार्य को प्रारंभ करने से पहले उद्देश्य निश्चित किए जाते हैं और उस उद्देश्य के आधार पर चलकर लक्ष्य तक पहुँचा जाता है । प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य है : –

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक सजगता का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।
- मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।

- निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक सजगता का अध्ययन करना ।
- मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक सजगता का अध्ययन करना।
- निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक सजगता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :

परिकल्पना किसी समस्या से संबधित समस्त सम्भावित समाधान पर विचार करना है। परिकल्पना के बिना अनुसंधान कार्य एक उद्देश्यहीन किया है । परिकल्पना समस्या के समाधान के लिए आवश्यक है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है : –

- उच्च माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की मानसिक सजगता में सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के उच्च एवं मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों की मानसिक सजगता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के उच्च एवं मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

- उच्च माध्यमिक स्तर के मध्यम एवं निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की मानसिक सजगता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के मध्यम एवं निम्न वर्ग के विद्यार्थियों शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

समस्या कथन :

"सामाजिक–आर्थिक आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक सजगता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन"

- **तकनीकी शब्दों की व्याख्या :–**

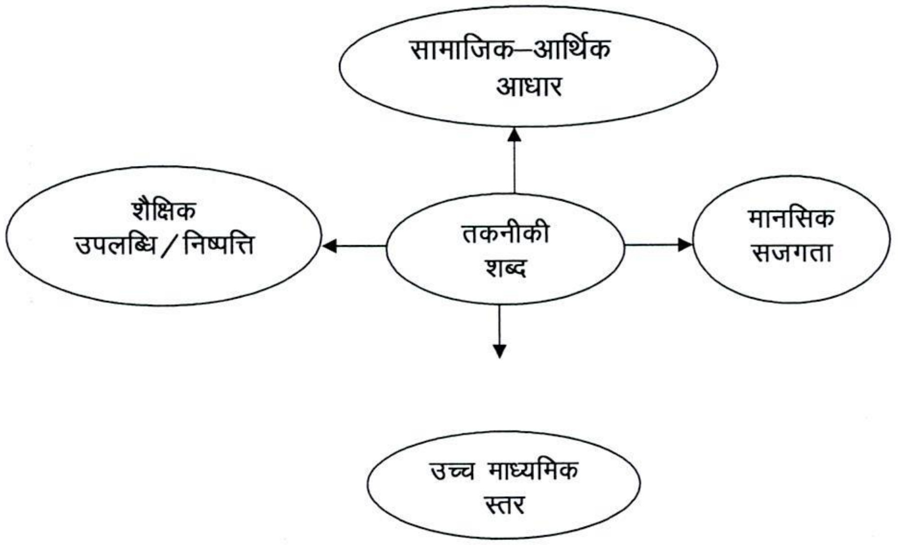

सामाजिक–आर्थिक आधार :–

सामाजिक–आर्थिक आधार व्यक्ति की संयुक्त आर्थिक और समाजशास्त्रीय स्थिति का कुल माप है जो उसकी आय, शिक्षा और रोजगार के आधार पर अन्य लोगों के मुकाबले व्यक्तिगत और पारिवारिक, आर्थिक और सामाजिक स्थिति का व्याख्यान

देता हैं। जब एक परिवार के सामाजिक – आर्थिक स्तर का विश्लेषण किया जाता है तो घर की आय, शिक्षा अभिविन्यास के स्तर और व्यवसाय का विश्लेषण किया जाता है। साथ ही साथ संयुक्त आय, व्यक्तिगत और घर के सदस्यों की व्यक्तिगत विशेषताओं का विश्लेषण है। इसे आमतौर पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है : उच्च, मध्यम और निम्न जिसमें एक परिवार स्थित हो सकता है। इन तीनों श्रेणियों में कोई परिवार या व्यक्ति किस में आ रहा है इस बात का पता लगाने के लिए तीन चर (आय, शिक्षा और व्यवसाय) का विश्लेषण किया जाता है।

- **उच्च माध्यमिक स्तर** :

  उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में अध्ययनरत उन छात्र–छात्राओं को उच्च माध्यमिक स्तर कहा जाऐगा जिनकी आयु 15 से 18 वर्ष के मध्य हो । यह पाठशाला का विभाजन का वह भाग है जो माध्यमिक स्तर के बाद प्रारम्भ होता है जिसमें प्रायः कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थी सम्मिलित किये जाते हैं। कक्षा 11 व 12 में अध्ययनरत करनेवाले विद्यार्थी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी कहलाते है। समान्यता कक्षा 11–12 तक आते–आते विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रवेश कर जाते है। कक्षा दस के बाद विद्यार्थियों को अपना संकाय क्षेत्र यथा (कला ,विज्ञान, वाणिज्य कृषि इत्यादि) चुनना होता है ।

- **मानसिक सजगता** :

  मानसिक सजगता से तात्पर्य उन मानसिक विशेषताओं से है जिसके द्वारा बालक किसी भी दशा, स्थिति, परिस्थिति एवं विषयवस्तु को ग्रहण करने एवं समझने के लिए तत्पर होता है। दूसरे शब्दों में जीवन की नई परिस्थितियों तथा समस्याओं के अनुरूप समायोजन करने की क्षमता, सीखने की योग्यता, पूर्व के अनुभवों से लाभ उठाने की योग्यता, तर्क करने की क्षमता अमूर्त्त चिन्तन करने की क्षमता आदि व्यक्ति की मानसिक सजगता का उदाहरण है।

अतः मानसिक सजगता को बुद्धि के पर्याय के रूप में समझा जा सकता है। वास्तव में व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता ही उसकी मानसिक सजगता क्षमता की निर्धारक होती है। व्यक्ति जितना बुद्धिमान होगा, उसमें उतनी ही मानसिक सजगता होगी।

- **शैक्षिक उपलब्धि :**

  शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह परीक्षण है जो किसी विशेष विषय अथवा पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान समझ और कुशलताओं का मापन करता है।

- इबेल के अनुसार : "उपलब्धि परीक्षण वह है जो छात्र द्वारा ग्रहण किए ज्ञान का अथवा किसी कौशल में निपुणता का मापन करता है"।

- शैक्षिक उपलब्धि स्कूल के विषय संबधी अर्जित ज्ञान का परीक्षण है। इस परीक्षण से विद्यार्थी की उन्नत्ति, विद्यार्थी ने किस सीमा तक विषय संबधी ज्ञान प्राप्त किया है।

- फ्रीमैन :– शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह परीक्षण है जो किसी विशेष विषय अथवा पाठ्यक्रम के विभिन्न विषय में व्यक्ति के ज्ञान, समय और कुशलता का मापन करता है।

शोध अभिकल्प :

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णानात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है, इसके माध्यम से उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की स्थिति एवं समूह की विशेषताओं को समझने के लिए वर्णात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया जायेगा। इसके द्वारा विद्यार्थियों की स्थिति, परिस्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के विभिन्न पक्षों को समझने का प्रयास किया जाएगा। वर्णात्मक शोध अभिकल्प के माध्यम से विभिन्न चरों के बीच संबंध को दर्शाया जाएगा। प्रस्तुत शोध अध्ययन गुणात्मक एवं मात्रात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। परिस्थितियाँ अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्त्तमान है विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्ति जो पायी जाती है इससे संबंधित है। गुणात्मक विधि द्वारा शाब्दिक वर्णन किया जाता है एवं मात्रात्मक पद्धति द्वारा गणितीय सूत्र के आधार पर वर्णन किया जाता है। मापन अथवा गणना के द्वारा संख्यात्मक आंकड़ों का संकलन किया जाएगा।

प्रस्तावित अनुसंधान पद्धति :

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रस्तावित अनुसंधान पद्धति में वर्णात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया जाएगा। इस पद्धति के द्वारा वर्त्तमान दशा से सम्बन्धित आंकड़ो को एकत्रित किया जाएगा। अध्ययन का क्षेत्र एवं उसकी गहराई को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण पद्धति द्वारा अध्ययन किया जाएगा। उच्च माध्यमिक स्तर के आधार पर मानसिक सजगता एवं शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित आंकड़ों का संकलन वर्णात्मक सर्वेक्षण पद्धति के आधार पर किया जाएगा।

जनसंख्या तथा न्यादर्श :

राँची जिला में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या, अध्ययन की जनसंख्या है । जनसंख्या के एक ऐसे भाग या अंश को प्रतिदर्श कहते है जो उस जनसंख्या का प्रतिनिधि होता है।

न्यादर्श का आलेख चित्रण :

महाविद्यालय के विद्यार्थी

छात्र	छात्रा
220	230

आंकड़ा संकलन स्त्रोत :

आंकड़ों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोत के आधार पर किया जाएगा। प्राथमिक स्त्रोत के अन्तर्गत मानकीकृत प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ा संकलन किया जाएगा। इसमें निम्न मानकीकृत मापनी सामाजिक–आर्थिक मापनी–अशोक के. कालिया, मानसिक सजगता मापनी – आर. पी. श्रीवास्तव तथा मानकीकृत शैक्षिक निष्पत्ति मापनी का प्रयोग किया जाएगा।

द्वितीय स्त्रोत में पत्रिका, पुस्तक, लेख, समाचार पत्र, वेबसाइट एवं अन्य स्त्रोतों के आधार पर संकलन किया जाएगा ।

- **अध्ययन का सीमांकन :**

  किसी भी शोध अध्ययन के लिए एक अध्ययन क्षेत्र का होना आवश्यक है। समस्या का व्यवहारिक रूप से अध्ययन करने के लिए सीमांकन आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन निम्न पर सीमांकित है –

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन झारखण्ड राज्य के राँची जिला में सीमांकित है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन राँची जिला के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय पर सीमांकित है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन स्नात्तक प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों पर किया गया है।

4. प्रस्तुत शोध अध्ययन राँची जिला के सरकारी एवं गैर सरकारी विशविद्यालय के अंर्तगत आने वाले महाविद्यालय पर सीमांकित है।

5. प्रस्तुत शोध अध्ययन 17–20 वर्ष के विद्यार्थियों पर सीमांकित है।

6. प्रस्तुत शोध अध्ययन 10 स्नात्तक महाविद्यालय पर सीमांकित है।

अध्यायीकरण :

1. प्रथम अध्याय

   (अध्ययन की पृष्ठभूमि)

2. द्वितीय अध्याय

   (संबधित साहित्य का पुर्वावलोकन एवं समीक्षा)

3. तृतीय अध्याय

   (शोध प्रारूप)

4. चर्तुथ अध्याय

   (आकड़ो का संकलन, सारणीयन एवं व्याख्या)

5. पंचम अध्याय

   (निष्कर्ष एवं सुझाव)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पाण्डेय डॉ. रामशकल – "शैक्षिक निबंध" – श्री विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ संख्या–45
2. त्यागी एवं पाठक :" शिक्षा के सामान्य सिद्धांत" विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृष्ठ संख्या–399
3. अस्थाना विपिन्न : "अधिगम के लिए आकलन"अग्रवाल पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या–399
4. कपिल एच. के : "अधिगम विधियाँ" राखी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–384
5. पाण्डेय डॉ. रामशकल : "भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ" बी. पी. प्रिटर्स आगरा–2, पृष्ठ संख्या – 199
6. सरीन एवं सरीन : "शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ" अग्रवाल पब्किेशन, पृष्ठ संख्या – 58
7. कपिल एच. के : "अनुसंधान विधियाँ" राखी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–60
8. मदान के. वी. एस : "शिक्षण एवं शोध अभिक्षमता" पियर्सन इंडिया ऐजुकेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, सी आई एन, पृष्ठ संख्या– 23
9. राय सी. पी. : "अनुसंधान परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, पृष्ठ संख्या–38

10. सक्सेना एन. आर. " उदियमान भारतीय समाज में शिक्षा", राज प्रिंटर्स

11. शर्मा आर. एस. "शोध प्रबन्ध लेखन" कमल बुक डिपो, मेरठ

12. अग्रवाल डॉ. संध्या – "शिक्षा मनोविज्ञान" विजय प्रकाशन मंदिर वाराणसी

13. पाठक पी. डी. – "शिक्षा मनोविज्ञान" बी. पी. प्रिन्टर्स, आगरा–2